अटूट बंधन

एक बार स्वरों ने व्यंजनों से कहा कि व्यंजन भाई तुम संख्या में 33 हो तो इतना घमंड क्यों करते हो। व्यंजनों ने उत्तर दिया कि अरे स्वरों तुम तो 11 हो हम तो घमंड जरूर करेंगे। स्वरों ने कहा अच्छा तुम अकेले कोई शब्द तो बनाओ। व्यंजनों ने सोचा, स्वर तो ठीक कह रहे हैं। स्वरों ने व्यंजनों से कहा कि तुम अब अपना घमंड छोड़कर हमसे मित्रता कर लो। फिर हम दोनों मिलकर अच्छे-अच्छे शब्द बनाएँगे। अब दोनों दोस्त बन गए और ऐसे ही शब्दों का निर्माण हुआ।

जैसे - म् + आ + त् + आ ; प् + इ + त् + आ
(माता) (पिता)

और इस तरह दोनों में अटूट बंधन हो गया।

काशवी यादव
5th C
समरविल स्कूल
ग्रेटर नोएडा